वार्तालाप की एक कक्षा

अमृता मसीह

मैं यहाँ छठी कक्षा की अँग्रेज़ी पाठ्यपुस्तक के एक पाठ पढ़ाने का अनुभव साझा कर रही हूँ जिसे मैंने बच्चों के दिन-प्रतिदिन के अनुभवों के साथ जोड़ने की कोशिश की। इस पाठ के माध्यम से बच्चे अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में सक्षम हुए और उन्होंने विभिन्न प्रकार की स्थितियों में मददगार संवादों की रचना करना भी सीखा। इससे उन्हें एक-दूसरे के साथ और एक-दूसरे से मिल-जुलकर सीखने में भी सहायता मिली क्योंकि इसमें हर बच्चे ने भाग लिया और एक-दूसरे की प्रस्तुति सुनी। इसकी वजह से बच्चों को स्कूल की प्रार्थना सभा में गतिविधियाँ प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास मिला।

मैंने पढ़ाने की शुरुआत कक्षा में बोर्ड पर विषय 'वार्तालाप' लिखकर की और फिर विद्यार्थियों से शब्द पढ़ने को कहा। उनमें से अधिकांश इस शब्द को पढ़ने में सक्षम थे क्योंकि हमने पाँचवीं कक्षा में मौखिक संवाद प्रस्तुतीकरण किए थे। मैंने उनसे पूछा कि इस शब्द का क्या अर्थ है।

बच्चों ने इस प्रश्न के उत्तर में कहा कि वार्तालाप का मतलब है बातचीत करना, चर्चा करना, व्यक्त करना, बैठक करना, सन्देश देना आदि। फिर मेरा अगला सवाल था कि आपने अपने दैनिक जीवन में किस तरह की बातचीत सुनी है?

फिर बच्चों ने अपने द्वारा सुनी गई बातचीत के अनुभव साझा करने शुरू किए और हमने एक सूची बनाई :

माँ और बच्चे के बीच

डॉक्टर और नर्स के बीच

प्रधानाध्यापक और शिक्षक के बीच

एक विद्यार्थी की दूसरे विद्यार्थी के साथ

ये, एवं ऐसे ही और भी कई अन्य उदाहरण विद्यार्थियों ने दिए।

इसके बाद मैंने अपना वास्तविक शिक्षण शुरू किया और उनसे कहा कि मैं उन्हें कुछ विषय दूँगी और उन्हें संवाद लिखने होंगे। वे अँग्रेज़ी, हिन्दी या दोनों भाषाओं में वार्तालाप प्रस्तुत कर सकते थे। वार्तालाप इनके बीच होना था :

डॉक्टर-नर्स

शिक्षक-विद्यार्थी

क्रिकेट के दो खिलाड़ी

पिता/माता-बच्चा

बस ड्राइवर-कंडक्टर

पुस्तक विक्रेता-विद्यार्थी

दो दोस्त

डाकिया और सामान्य नागरिक

दो गाँव वाले

सफ़ाई वाली दीदी और विद्यार्थी

मैंने कक्षा को दो-दो विद्यार्थियों के समूहों में विभाजित किया और उन्हें चर्चा करने और अपने 'वार्तालाप' को प्रस्तुत करने के लिए दस मिनट का समय दिया। पहला संवाद कुछ इस तरह का रहा :

विद्यार्थी : मुझे एक किताब चाहिए।

पुस्तक विक्रेता : कौन-सी किताब?

विद्यार्थी : अँग्रेज़ी की किताब।
पुस्तक विक्रेता : यह लीजिए।

विद्यार्थी : इसकी क्या क़ीमत है?

पुस्तक विक्रेता : एक सौ पचास रुपए।

विद्यार्थी : दाम थोड़े कम कीजिए।

पुस्तक विक्रेता : ठीक है, मुझे एक सौ तीस रुपए दे दो।

विद्यार्थी : धन्यवाद।

फिर तीसरे और चौथे विद्यार्थी ने आकर अपने संवाद को प्रस्तुत किया। अन्य विद्यार्थियों ने भी बारी-बारी से आकर शिक्षक और विद्यार्थी के संवाद प्रस्तुत किए और अपने कार्यकलापों से सबको हँसाया।

कुछ विद्यार्थी रह गए थे इसलिए मैंने उनसे कहा कि हम अगले दिन इस गतिविधि को जारी रखेंगे।

अगले दिन मैंने उन विद्यार्थियों के वार्तालाप संवाद के साथ कक्षा शुरू की जो पिछले दिन प्रस्तुत नहीं कर पाए थे। उनमें से कुछ ने हिन्दी में संवाद प्रस्तुत किए तो कुछ ने द्विभाषिक रूप से। इस प्रकार हर किसी को अपने संवाद प्रस्तुत करने का मौक़ा मिला।

फिर हमने चर्चा की कि किसी भाषा को जानने से विभिन्न प्रकार की बातचीत में कैसे सहायता मिलती है। तब हम अपने विचार आराम से प्रकट कर सकते हैं। बच्चों ने दैनिक जीवन के अपने अनुभव भी साझा किए। इस तरह कक्षा समाप्त हो गई। विषय के प्रति विद्यार्थियों के उत्साह और रुचि को देखते हुए मैं सोचने लगी कि इसे और अधिक रोचक तरीके से कैसे आगे बढ़ाया जाए ताकि मैं विद्यार्थियों को इस प्रक्रिया में और अधिक शामिल कर सकूँ। इस तरह उनके सीखने ने मुझे अगले दिन की योजना को और भी अलग और अन्तःक्रियात्मक बनाने के लिए प्रेरित किया। मैंने कुछ ऐसे सवालों की योजना बनाई, जिनका उपयोग वे अपने दैनिक जीवन में कर सकते हैं। प्रश्न थे :

तुम कहाँ जा रहे हो?

तुम क्या कर रहे हो?

तुम कहाँ रहते हो?

तुमने नाश्ते में क्या खाया?

क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?

क्या तुमने अपने हाथ धो लिए?

तुमने दोपहर के खाने में क्या खाया?

क्या तुमने अपना गृहकार्य किया?

क्या मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ?

तुम्हें कौन-सा खेल पसन्द है?

क्या तुम मेरे साथ खेलोगे?

तुमने रात के भोजन में क्या खाया?

मैंने पाँच-पाँच विद्यार्थियों के समूह बनाए और हर समूह को दो प्रश्न दिए। उन्हें अँग्रेज़ी में संवाद लिखने थे और एक चार्ट में लिखित रूप में प्रस्तुत करना था। समूहों में सभी तीन ग्रेड थे ताकि वे एक-दूसरे से सीख सकें।

मैंने कक्षा में प्रवेश किया और गतिविधि को समझाया तथा उन्हें एक मार्कर पेन, चार्ट पेपर और उनका विषय दिया।

मैंने बच्चों को समझाया कि ये दोनों प्रश्न एक-दूसरे के साथ किस प्रकार से जुड़े हुए हैं और मित्रों या रिश्तेदारों के नामों का प्रयोग करके उनका उपयोग संवाद लिखने के लिए कैसे किया जा सकता है। उदाहरण के लिए :

तुम्हें कौन-सा खेल पसन्द है?

क्या तुम मेरे साथ खेलोगे?

मैंने उन्हें अपने समूहों में विषयों पर चर्चा करने और फिर अपने चार्ट पर प्रस्तुत करने के लिए लगभग 15 मिनट का समय दिया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब दो समूहों ने दिए गए समय के भीतर ही अपना कार्य समाप्त कर लिया और उनके संवाद भी अद्भुत थे। मैं एक समूह प्रस्तुति साझा करूँगी। उनके प्रश्न थे-

तुमने दोपहर के भोजन में क्या खाया?

क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?

दो विद्यार्थियों ने अपने वार्तालाप के लिए संवाद तैयार किए।

रानी : हैलो राजू

राजू : हैलो रानी

रानी : तुम कैसे हो?

राजू : अरे, आज तुमने दोपहर के भोजन में क्या खाया था?

रानी : मैंने आलू और चपाती खाई। क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है? पेट में दर्द है क्या?

राजू : हाँ रानी, मैं अभी डॉक्टर के पास जा रहा हूँ।

रानी : अपना ख़्याल रखना! बाय राजू।

राजू : बाय, रानी।

इस तरह बच्चे संवाद की रचना करने में सक्षम हो पाए और उन्हें बोलने के साथ-साथ लेखन के भी अवसर उपलब्ध हुए। संवाद लिखने के लिए समूहों में काम करते समय बच्चे वर्तनी सुधारने में एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। इस प्रकार समूह के प्रत्येक बच्चे ने अपने विचारों को लिखित रूप में भी व्यक्त करना सीखा। अतः वार्तालाप की कक्षा ने विद्यार्थियों को एक ऐसी भाषा में वार्तालाप करने में मदद की, जिसे बोलने और लिखने में कुछ विद्यार्थी हिचकिचाते हैं लेकिन समूहों में काम करते समय वे अपनी झिझक को भूल जाते हैं और उस भाषा में बोलते हैं। एक शिक्षक के रूप में मुझे पाठ्यपुस्तक के पाठ का उपयोग करने का मौक़ा बहुत ही चुनौतीपूर्ण और फ़ायदेमन्द लगा और मुझे भी उतना ही आनन्द आया जितना कि बच्चों को।

अमृता मसीह फरवरी 2012 से धमतरी में अज़ीम प्रेमजी स्कूल में कार्यरत हैं। उन्होंने 2000 में एक निजी स्कूल में शिक्षण कार्य शुरू किया, जहाँ उन्होंने अँग्रेज़ी और विज्ञान विषय पढ़ाया। इसके बाद उन्होंने विज्ञान की शिक्षिका के रूप में कार्य किया। उन्होंने जीवविज्ञान और शिक्षा में स्नातक तथा रसायनशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। उनसे amrita.masih@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण :** प्रीति मिश्रा **कॉपी एडिटर :** ज्योति चौरड़िया